बघेली भाषा और साहित्य

डॉ० श्रीटीकमसिंह 'तोमर', एम्० ए० (द्वय), डि० फिल्०
संस्कृत-हिन्दी-विभागाध्यक्ष
बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा

वैशाख, कृष्ण षष्ठी, गुरुवार, २०१९ विक्रमाब्द;
१८८४ शकाब्द; २६ अप्रैल, १९६२ खृष्टाब्द

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

परिचय

भारतवर्ष का प्राचीन 'मध्यदेश' नामक भू-भाग आधुनिक समय में 'हिन्दी-प्रदेश' के नाम से प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र में प्रचलित भाषा-समुदाय को कई भागों में विभक्त किया गया है। इनमें प्रथम पश्चिमी हिन्दी के नाम से विख्यात है, जिसके अन्तर्गत खड़ी बोली, बाँगरू, ब्रज, कन्नौजी तथा बुन्देली भाषाएँ सम्मिलित हैं। पश्चिमी हिन्दी के पूर्व में 'पूर्वी हिन्दी' प्रचलित है, जिसकी मुख्य भाषाएँ अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी हैं। पूर्वी हिन्दी के पूर्व में बिहारी भाषा-समुदाय की भोजपुरी, मैथिली तथा मगही भाषाएँ हैं। इस प्रकार, पश्चिमी हिन्दी और बिहारी भाषा-समूह के मध्य स्थित पूर्वी हिन्दी की एक प्रमुख भाषा का नाम 'बघेली' है।

बघेली भाषा-क्षेत्र का नाम बघेलखण्ड है। इस प्रदेश का उल्लेख अत्यन्त प्राचीन समय से मिलता है। रामायण-काल में यह भू-भाग कोसल-प्रांत के अन्तर्गत था। महाभारत-काल से यह मेकल और विराट् नामक दो राज्यों में विभक्त था। सन् १४० से २१५ ई० तक यहाँ पर नाग-वंश ने शासन किया। तदनंतर वाकाटक, गुप्त, सेंगर, कलचुरी, चंदेल आदि राजवंशों ने इस प्रदेश के विविध भू-भागों पर राज्य किया। १२वीं तथा १३वीं शताब्दी से यहाँ पर गोंड, भर आदि जातियों की सत्ता रही। सन ११७६-७७ ई० में अन्हलवाड़ा पाटन के सोलंकी राजपूतों की शाखा के व्याघ्रदेव बघेल ने यहाँ के शासक को पराजित करके बघेल-राजवंश की नींव डाली। उसी समय से इस प्रदेश का नाम बघेलखण्ड पड़ा। तब से देशी राज्यों के विलीन होने तक बघेलखण्ड में बघेल-राजपूत शासन करते रहे। एक समय बघेल शासकों का राज्य-विस्तार उत्तर में गंगा-यमुना से दक्षिण में नर्मदा तक था। रीवाँ, नागौद, मैहर, सोहावल, कोठी, बरौंधा, कसौटा आदि बघेलखण्ड के मुख्य राज्य थे।

बघेलखण्ड के शासक वीर, शासन-पटु, प्रजावत्सल, साहित्य-संगीत और कला के प्रेमी रहे हैं। बम्हनी, क्योंटी, चंदरेह, मंडवा, भमरसेन आदि के शिलालेख एवं ताम्रपत्र यहाँ के शासकों की कीर्ति के साक्षी हैं। माड़ा और सिलहरा की गुफाएँ, भरहुत का स्तूप, बैजनाथ, विराट् (सोहागपुर) तथा अमरकंटक के मंदिर, कालिंजर और बांधवगढ़ के दुर्ग यहाँ की स्थापत्य-कला के गौरवपूर्ण प्रतीक हैं।

इस प्रदेश में विविध जातियाँ निवास करती हैं। लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। मुख्य उद्योग कृषि है। शैव, वैष्णव, नाथ-पंथ, संत-मत और जैन-मत मुख्य धर्म हैं।

बघेलखण्ड में अनुपम नैसर्गिक छटा के दर्शन होते हैं। इसमें दो प्रमुख पर्वत-श्रेणियाँ हैं—कैमूर और मेकल। कैमूर विंध्याचल की एक शाखा है, जो बघेलखण्ड के सौ मील से अधिक भाग को घेरे हुए है। गोविंदगढ़ से आगे यह पर्वतश्रेणी दो भागों में विभक्त हो जाती है, जो क्रमशः भिक्ष और नेईंजुआ नाम से विख्यात हैं। कैमूर पर्वत से टोंस (तमसा अथवा परनास) तथा इसकी सहायक नदियाँ बीहर तथा चचैया निकलती हैं। मेकल-पर्वतमाला पर प्रसिद्ध अमरकंटक तीर्थ-स्थान अवस्थित है, जो सोन (हिरण्यवाह) तथा नर्मदा (रेवा) का उद्गम-स्थल है। सोन की प्रमुख सहायक नदियाँ महानदी, जुहिला, बनास और गोपद हैं। बघेली भाषा और साहित्य के विकास में यहाँ की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों का पर्याप्त योगदान रहा है।

भाषा-विज्ञानवेत्ताओं द्वारा पश्चिमी हिन्दी की उत्पत्ति शौरसेनी प्राकृत तथा अपभ्रंश से, बिहारी भाषाओं की मागधी से तथा पूर्वी हिन्दी की अर्द्धमागधी से मानी गई है। अर्द्धमागधी प्राकृत तथा अपभ्रंश को जैन प्राकृत तथा जैन अपभ्रंश नाम से भी पुकारा जाता है; क्योंकि जैन साहित्य का अधिकांश भाग इसी भाषा में है। शौरसेनी तथा मागधी प्राकृतों तथा अपभ्रंशों के मध्य स्थित होने के कारण अर्द्धमागधी इन भाषाओं से अधिक प्रभावित थी। यही कारण है कि पूर्वी हिन्दी का पश्चिमी हिन्दी और बिहारी भाषा-समुदाय के साथ इतना घनिष्ठ साम्य है।

पूर्वी हिन्दी अधिक विस्तृत भाग में प्रचलित है। इसकी अवधी भाषा सामान्यतः लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, खीरी, फैजाबाद, गोंडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़ और बाराबंकी के अतिरिक्त गंगा-पार इलाहाबाद, फतेहपुर तथा कानपुर के कुछ भाग में भी बोली जाती है। बिहार-प्रदेश के मुसलमान भी अवधी का प्रयोग करते हैं।

पूर्वी हिन्दी की छत्तीसगढ़ी (अन्य नाम लरिया या खलताही) मध्य प्रान्त में रायपुर, बिलासपुर, काँकेर, नंदगाव, खैरगढ़, रायगढ़, कोरिया, सरगुजा आदि में विभिन्न रूपों में बोली जाती है।

अवधी के दक्षिण में बघेली भाषा का क्षेत्र है। बघेलखण्ड (मध्यप्रदेश) में प्रचलित होने के कारण इसका यह नाम पड़ा है। इस भू-भाग के रीवा-राज्य तथा नगर के नाम पर इस को रीवाई भाषा भी कहते हैं। बघेली बघेलखण्ड के अतिरिक्त छोटानागपुर, चन्द्रभकार, रीवाँ के दक्षिण में स्थित नाराइला और मिर्जापुर जिले के दक्षिणी भाग में सोन नदी के आसपास बोली जाती है। साथ ही, यह भाषा जबलपुर के कुछ भाग में भी प्रचलित है, जहाँ वह पूर्व की ओर बढ़ती हुई शनैः-शनैः बुन्देली में मिल जाती है। इसका बुन्देली भाषा से मिश्रित रूप उत्तरप्रदेश के फतेहपुर, बाँदा, हम्मीरपुर के अतिरिक्त मारइला (मध्यप्रदेश , के दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में भी प्रचलित है।

अवधी और बघेली भाषा-क्षेत्र को विभाजक रेखा यमुना नदी मानी जा सकती है, जो फतेहपुर और बाँदा जिले से होती हुई प्रयाग के पास गंगा में जा मिलती है। यह सीमा अधिक वैज्ञानिक नहीं है; क्योंकि फतेहपुर में यमुना के उत्तरी किनारे पर 'तिरहारी' बोली जाती है, जिसमें बघेली का मिश्रण है। साथ ही, इलाहाबाद के दक्षिण पूर्व की बोली को यद्यपि बघेली कहते हैं, तथापि उसमें अवधी तथा बघेली का सम्मिश्रण है।

भाषागत सीमाएँ

बघेली भाषा के उत्तर में दक्षिण-पूर्व इलाहाबाद की मिश्रित अवधी तथा पश्चिम में मिर्जापुर के मध्यवर्त्ती भाग की पश्चिमी भोजपुरी भाषाएँ हैं। इसके पूर्व में छोटानागपुर तथा बिलासपुर-राज्य की छत्तीसगढी भाषा का क्षेत्र है। इसके दक्षिण में कई भाषाओं तथा बोलियों का मिश्रित रूप है, जिसमें बालाघाट की मराठी प्रमुख है। बघेली के दक्षिण-पश्चिम में बुन्देली भाषा का प्रदेश है।

बघेली और अवधी का अन्तर—भाषा-सम्बन्धी विशेषताओं की दृष्टि से बघेली तथा अवधी में बहुत कम अन्तर है। बघेली भाषा-भाषियों की भावनाओं का आदर करने की दृष्टि से ही इसे एक स्वतंत्र भाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है। नीचे बघेली और अवधी की प्रमुख विशेषताओं पर विचार किया जा रहा है —

१. बघेली की अतीत काल की सहायक क्रिया में 'ते' अथवा 'तै' संयुक्त किया जाता है; पर अवधी में इसका अभाव है। जैसे;

   अवधी—देत रहै (देता रहा था)। बघेली—देत-रहा-तै।

२ अवधी के उत्तम तथा मध्यमपुरुष के भविष्यत् काल के रूप 'व' संयुक्त करके सम्पन्न होते हैं; किन्तु बघेली में ये रूप 'ह' जोड़कर बनाये जाते हैं। जैसे;

   अवधी—देखवौं (देखूँगा)। बघेली—देखिहौं।

३ अवधी 'व' बघेली में 'ब' में परिणत हो जाता है। जैसे;

   अवधी—अवाज बघेली—अबाज।

   अवधी—जवाब बघेली—जबाब।

इन विभिन्नताओं पर विचार करते हुए डॉ० बाबूराम सक्सेना लिखते हैं—'से' तथा 'नै' वस्तुतः 'हता' तथा 'हते' अथवा 'हती' के लघुरूप हैं। इस प्रकार के लघुरूप केवल अवधी तथा छत्तीसगढ़ी में ही नहीं मिलते, अपितु पश्चिमी हिन्दी की बोलियों में भी पाये जाते हैं। 'व' का 'ब' में परिवर्तन भी अवधी की बोलियों में मिलता है, किन्तु इनके अतिरिक्त बघेली की निम्नलिखित विशेषताओं का अवधी में अभाव है—

१. बघेली विशेषण-पदों के दीर्घान्त रूपों में 'हा' संयुक्त होना है। जैसे;
निकहा—अच्छा, भला। (भोजपुरी में निकहा तथा निकहन दोनों रूप प्रयुक्त होते हैं।
२. आदरार्थ, आज्ञा का रूप देईं होता है। (भोजपुरी में देईं हो जाता है, जैसे—रउवां देईं)।
ऐसा प्रतीत होता है कि ये विशेषताएँ बघेली में भोजपुरी से आई हैं।[१]

इससे स्पष्ट है कि अवधी और बघेली में नाममात्र का अन्तर है। उनमें विरोध की अपेक्षा साम्य अधिक है।

बघेली बोलनेवालों की संख्या

विशुद्ध बघेली का प्रयोग बघेलखण्ड के रीवाँ, नागौद, सुहावल, मैहर तथा कोठी नामक पुराने राज्यों में होता है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग १२,००० वर्गमील है। रीवाँ की सीमा के पूर्व-दक्षिण में कैमूर-पर्वतमाला के उस ओर के आदिवासी भी बघेली बोलते हैं, जो मूल बघेली से बहुत कम भिन्न है। इसे गौंडी भाषा कहते हैं। इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि गौंडी में क्रियापदों के रूप बघेली की तरह नहीं, वरन् बिहारी के समान बनाये जाते हैं। परिनिष्ठित बघेली के बोलनेवालों की संख्या लगभग १२ लाख और गौंडी बोलनेवालों की लगभग पाँच लाख है। समस्त मिश्रित बोलियों को भी सम्मिलित कर लेने पर बघेली भाषा-भाषियों की संख्या लगभग ४६ लाख है। बोलनेवालों की आधुनिकतम ठीक संख्या बतलाना कठिन है; क्योंकि सन् १९३१ ई० के बाद से जन-संख्या में बोलियों का लिखना छोड़ दिया गया है। 'आजकल इसके बोलनेवालों की संख्या १,३०,००,००० बतलाई जाती है'।[२]

व्याकरण

केलॉग ने अपने 'ग्रामर ऑव दि हिन्दी लैंग्वेज' नामक ग्रंथ में बघेली भाषा के व्याकरण पर विस्तार से विचार किया है। पाठकों की जानकारी के लिए नीचे व्याकरण की विशेषताओं पर विचार किया जा रहा है :

१. संज्ञा—इसके रूप निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	घ्वाड (घोड़ा)	घ्वाड़े, घ्वाड़ें
तिर्यक्	घ्वाड़	घ्वाड़न

अनुसर्ग

कर्म—सम्प्रदान : क, का, कहा, कहे।
करण—अपादान : से, ते, तार।
सम्बन्ध : कर।
अधिकरण : म।

इसमें कर्ता के अनुसर्ग 'ने' का अभाव है। सम्बन्ध के अनुसर्ग में लिंग के अनुसार परिवर्तन नहीं होते। इसी प्रकार, विशेषण के रूप भी पुँल्लिंग तथा स्त्रीलिंग में एक ही रहते हैं और उनमें परिवर्तन नहीं होता।[३]

---

१. दि इवोल्यूशन ऑव अवधी, पृ० ३-४; भोजपुरी भाषा और साहित्य, प्रथम खण्ड, पृ० १४५।
२. हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, पृ० २४२।
३. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, भाग ६, पृ० २२; भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० १५६।

२. सर्वनाम

एकवचन	मैं	तू	आप	स्वयं	यह	वह	जौन	तौन	कौन
कर्ता	मँय्	तँय्	अपना	—	या	वह्	जौन, जकसेय्	तौन, तकसेय्	कउन्
तिर्यक्	म्वहि, म्वाँ, म्वारे	त्वहि, त्वाँ, त्वारे	अपना, अपाने	—	यहि, या	वहि	जऊनै, ज्यहि, जेहि, ज्या	तऊनै, त्यहि, तेहि, त्या	—, क्यहि, केहि, क्या
सम्बन्ध	म्वार्	त्वार्	—	—	ए, यहि कर, आदि	वहिकर् आदि	ज्यहिकर् आदि	त्यहिकर् आदि	क्याहेकर आदि
बहुवचन कर्ता	हम्ह्	तुम्ह्	—	—	ए, एँन्ह	ओ, उन्ह्	जेन्ह्	तेन्ह्	केन्ह
तिर्यक्	हम्ह्, हम्हारे	तुम्ह्, तुम्हारे	—	—	यन्, यन्ह्	उन्, उन्ह्	जेन्ह्, ज्यन्, ज्यन्ह्	तेन्ह्, त्यन्, त्यन्ह्	केन्ह्, क्यन्, क्यन्ह्
सम्बन्ध	हम्हार्	तुम्हार्	—	—	यन्कर आदि	उन्कर आदि	जेन्ह्कर आदि	तेन्ह्कर आदि	केन्ह्कर आदि

हिन्दी क्या बघेली में काह होता है। इसके तिर्यक् रूप कई अथवा कयी होते हैं। कोई इसमें कउनी तथा कोऊ हो जाता है। तिर्यक् में भी इसके रूप अपरिवर्तित ही रहते हैं। 'कुछ' का रूप बघेली में अपरिवर्तित रहता है।[१]

अपना के तिर्यक् रूप से स्पष्ट है कि यह शब्द भोजपुरी से बघेली में आया है।

३. (अ) क्रियाएँ

सहायक क्रियाएँ

वर्त्तमान—मैं हूँ आदि		अतीत—मैं था आदि				
		प्रथम रूप		द्वितीय रूप		
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	हूँ, ऑं	है	रहेउँ, रहेय	रहेन्	—	तें
२.	है	हौ, अहेन्	रहा, रहे	रहेन्	ते	तें
३.	है, आ	हैं, अहेन	रहा	रहेन्	ते, तो, ता	तें
		अहे, ऑं				

	वर्त्तमान संभाव्य (यदि) मैं होऊँ		भविष्यत्—मैं होऊँगा		अतीत—मैं हुआ	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	होऊँ	होम्	होव्येउँ	होव् , होवै	भयौं	भयेन्
२.	ह्वास	ह्वाव्	होइहेस्	होवा	भयेस्	भयेन्
३.	ह्वाय्	वाँय्	होई	होयिहैं	भ	भयेन्[२]

(आ) क्रियापद

सकर्मक क्रिया के अतीत के रूप कर्तृवाच्य में ही चलते हैं।

क्रियासूचक संज्ञा : देखब, देखना।

कृदन्तीय रूप—वर्त्तमान : देखत् (देखते हुए), अतीत—देख (देखा)।

असमापिका : देख-कै (देखकर)।

---

१. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, भाग ६, पृ० २२; भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० १५७-५८।

२. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, भाग ६, पृ० २२; भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० १५८।

वर्तमान सम्भाव्य		भविष्यत्		आज्ञा अथवा विधिक्रिया
(यदि) मैं देखूँ आदि		मै देखूँगा आदि		तुम देखो आदि
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	
१. देखौं	देखन्	देख्येउँ	देखिब् / देखबै	देखष् , तू देख
२. देखस्	देखत् / देखब्	देखिहेस् / देखिबेस्	देखिबा	देखब, तुम देखो
३. देखि	देखॉय	देखी	देखिहैं	

अतीत—मैंने देखा आदि

अतीत (सम्भाव्य) (यदि) मैं देखा होता आदि

	एकवचन		बहुवचन		एकवचन		बहुवचन	
	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	पुँल्लिग	स्त्रीलिंग
१.	देखेहूँ	देखी	देखेन्	देखिन्	देखत्येहुँ	देखत्यिहुँ देखित्यौं	देखत्येन्	देखत्यिन्
२.	देखेह	देखिह्	देखेँह्	देखिँह्	देखत्येह्	देखत्यिह्	देखत्येँह्	देखत्यिहि
३.	देखी	देखी	देखेन	देखिन्.	देखत्येइ	देखत्यिइ	देखत्येन्	देखत्यिन्

ऊपर के रूपों में सर्वत्र त्य के स्थान पर त् का प्रयोग होता है ।[1]

निश्चित वर्तमान—मै देख रहा हूँ आदि

घटमान अतीत (Imperfect)—मैं देख रहा था आदि

	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	देखतौं	देखत्ये—हैं	देखत्—रहेउँ	देखत { —तें / —रहेत्
२.	देखँते—है	देखत—हेन्	देखत् { —तैं / —रहा	देखत् { —तें / —रहेन्
३.	देखता	देखतॉ	देखत् { —ते, —ता / —रहा	देखत् { —तें / —रहेन्

१. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, भाग ६, पृ० २३; भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० १५६-६१ ।

	पूर्ण (Perfect)—मैने देखा है आदि		पूर्ण भूतकाल (Pluperfect)—मैनें देखा था आदि	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	देख-हौं	देख–हैं	देखे–हुँ { —ते, —ता / —रहा }	देखेत् { —तें / —रहेन् }
२.	देखेग–है	देखे / देखेन् } —इन्	देखेह् { —ते, —ता / —रहा }	देखेंह { —तें / —रहेन् }
३.	देखेस है	देखे / देखेन् } —अहिन्	देखी { —ते, —ता / — रहा }	देखन् { —तें / — रहेन् }

अतीत काल में अकर्मक क्रियाओं के रूप 'भयों' की भाँति चलते हैं।

(इ) अनियमित क्रियाओं के रूप

होब् (होना) का अतीत कृदन्तीय रूप 'भ' हो जाता है। इसी प्रकार, जाब् (जाना) का अतीत कृदन्तीय रूप 'ग' हो जाता है। धातुओं के अंत का 'ए', 'या' में बदल जाता है और पुनः उनके रूप होय् की तरह चलते हैं। इस प्रकार दयात् (देता हुआ), द्यावा (तुम दोगे) होता है। देब (देना), लेब (लेना) तथा करब (करना) के अतीत कृदन्तीय के रूप क्रमश. दीन्ह, लीन्ह तथा कीन्ह होते हैं।[1]

बघेली में देवनागरी तथा कैथी दोनों लिपियों का प्रयोग होता है।

मिर्जापुर जिले के सोन-पार भाग में प्रचलित बघेली बोली में उक्त जिले के मध्य में बोली जानेवाली पश्चिमी भोजपुरी के शब्द और प्रयोग अधिकता से मिलते हैं। जैसे;

मैल—हुआ। पश्चिमी भोजपुरी से आया है।
जाब—मै जाऊँगा। ,,
कहब —मैं कहूँगा। ,,

पश्चिमी मिश्रित बोलियाँ

बघेली की कई बोलियाँ इसके पश्चिम में बोली जाती हैं। इनमें से एक तिरहारी (तीरहारी) है। यमुना के किनारे पर प्रयुक्त होने के कारण इसका यह नाम पड़ा है। फतेहपुर, बाँदा तथा हम्मीरपुर में इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग ढाई लाख है। बाँदा की बोली में शब्दों की वर्तनी परिनिष्ठित बघेली से कुछ भिन्न हो जाती है। जैसे;

गदेल (लड़का) से गद्याल।

इसमें क्रिया के रूप अवधी के समान चलते हैं। केवल यह अन्तर है कि भूतकाल की सकर्मक क्रिया के पूर्व संज्ञा के रूप करण कारक में पश्चिमी हिन्दी तथा बुन्देली 'ने के साथ प्रयुक्त होता है। जैसे;

सब मड़ै-ने आपन सब लैया-पुँजियाँ द्वानौ गद्यालन का बाँटि दिहिस।

कभी-कभी करण का प्रयोग तिर्यक् में होता है, जिसका अंत 'ऐ' में होता है। जैसे; बापै अथवा बपवै। यह उक्त स्थान की प्राकृत भाषा के प्रयोग का रूप है, जो उसमें अबतक सुरक्षित है।

1. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, भाग ६, पृ० २३; भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० १६१-६१।

हम्मीरपुर की तिरहारी पर बुन्देली का अधिक प्रभाव है। कालिंजर के आसपास की बोली में भी बघेली और बुन्देली के प्रयोग मिलते हैं। बाँदा जिले की अन्य बोलियाँ गहोरा, पठा और अन्तरपटा, जुरार, कुंडी, बगरावल तथा अगहर हैं, जो तिरहारी बघेली में साम्य रखते हुए भी बुन्देली भाषा से अधिक प्रभावित हैं।

बनाफरी बुन्देलखण्ड के एक बड़े भू-भाग में बनाफर राजपूत निवास करते हैं। उन्हीं के नाम पर बघेली का इस बोली का नाम बनाफरी अथवा बनारी पड़ा है यह हम्मीरपुर के दक्षिण-पूर्वी भाग बुन्देलखण्ड में चन्दल (चरखारी), लौरी (छतरपुर), धर्मपुर (पन्ना) नयगवाँ, रेवाई, गौरिहार, बेरी, अजयगढ, बावनी और बघेलखण्ड के अन्तर्गत नागौद तथा मैहर के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। बनाफरी पर बुन्देली भाषा का पर्याप्त प्रभाव है। इसके बोलनेवालों की संख्या अनुमानतः साढे तीन लाख है।

गौंडवानी अथवा मण्डलाहा— मध्यप्रदेश में गौंड राजाओं के चार राज्यों को गौंडवाना नाम से पुकारा जाता था। इनमें से गढ़ा-मण्डला प्रमुख राज्य था, जिसकी राजधानी मण्डला नगर थी। इस भू-भाग की भाषा गौंडवानी अथवा मण्डलाहा नाम से विख्यात है। इसके बोलनेवालों की संख्या अनुमानतः २५ लाख है। यह पूर्वी भाषा की एक बोली है; पर इसका रूप बघेली से अधिक मिलता जुलता है। गौंडवानी पर छत्तीसगढ़ी भाषा का पर्याप्त प्रभाव है।

दक्षिणी मिश्रित बोलियाँ

१–२. मरारी तथा पवारी —ये दोनों बोलियाँ बालाघाट और बराहरा में बोली जाती हैं। इन बघेली बोलियों पर अन्य निकटवर्त्ती भाषाओं का अत्यधिक प्रभाव है। उक्त दोनों जिलों के आसपास आर्य-परिवार की छत्तीसगढी, बघेली, बुन्देली तथा मराठी एवं द्रविड परिवार की कई भाषाएँ मिलती हैं। ऊपर की दोनों बोलियों को इन सभी भाषाओं ने प्रभावित किया है। मरारी मरार जाति के लोगों की बोली है, जो माली का काम करते हैं। पँवारी बोली का प्रयोग पँवार जाति के क्षत्रिय प्रमुख रूप से करते हैं। मरारी बोलनेवालों की संख्या लगभग ५३ हजार तथा पँवारी बोलनेवालों की संख्या लगभग ४२ हजार है।

३. कुम्हारी —यह बोली कुम्हार जाति के लोगों द्वारा बोली जाती है। यह छिन्दवाड़ा, चाँदा तथा भँडरा जिलों में बोली जाती है। इस पर मराठी का अधिक प्रभाव है। इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग डेढ लाख है।

४. ओझी —ओझी का प्रयोग ओझा लोग करते हैं। ये द्रविड़ जाति के गौंड हैं और ये उनके भाट होते हैं। ये छिन्दवाड़ा में इस भाषा का प्रयोग करते हैं। इस बोली के बोलनेवाले अनुमानतः छह हजार हैं।

इस प्रकार बघेली की विभिन्न बोलियाँ अधिक विस्तृत क्षेत्र में फैली हैं।

साहित्य

पूर्वी हिन्दी की बोलियों में केवल अवधी भाषा में ही पुष्कल मात्रा में प्रौढ एवं उच्च कोटि के साहित्य की सर्जना हुई है। बघेली में साहित्यिक रचनाओं का प्रायः अभाव है। फिर भी, बघेलखण्ड का राजदरबार विद्यानुरागी, कला-प्रेमी और कवियों का आश्रयदाता रहा है। स्वयं यहाँ के महाराजाओं ने महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का निर्माण किया है। उदाहरणार्थ, महाराज जयसिंह (१७६५—१८३४ ई०) ने २८ ग्रंथों की रचना की है, जिनमें से 'कृष्ण-सिंगार-तरंगिनी' तथा 'हरिचरित्र-चंद्रिका' विशेष उल्लेखनीय हैं।

इनमें कवित्व, काव्य-सौष्ठव, अनुभूति तथा सरसता विद्यमान है। महाराजा विश्वनाथसिंह (सन् १७८६—१८५४ ई०) की साहित्य-सर्जना का विशिष्ट स्थान है। इन्होंने संस्कृत में २० तथा हिन्दी में ५८ ग्रंथों की रचना की है। इनका 'आनन्द-रघुनन्दन' नाटक भारतेंदु द्वारा हिन्दी का प्रथम नाटक स्वीकार किया गया है। इनकी कविता अधिकतर दर्शनात्मक अथवा उपदेशात्मक है। महाराज रघुराजसिंह (१८२३—१८७६ ई०) ने संस्कृत में १२ और हिन्दी में १७ पुस्तकें लिखी हैं। इनमें से 'रामस्वयंवर' विशेष उल्लेखनीय है। मुख्यतया आपकी वीररस, प्रकृति-चित्रण, भक्ति एवं नीति-विषयक कविताएँ मर्मस्पर्शिनी हैं।

नरेशों के समान ही रीवाँ की महारानियों ने भी साहित्य-सेवा की है। महाराज रघुराजसिंह की महारानी शिवदानी कुँवरि का 'सिया स्वयंवर' ग्रंथ उल्लेखनीय है। इनकी राजकुमारी विष्णुकुमारी ने 'पद्मुक्तावली' तथा 'श्याम-आनन्दिनी' की रचना की है। महाराज व्यंकटरमणसिंह की छोटी महारानी द्वारा रचित २५ ग्रंथ हैं, जिनमें ज्ञान, भक्ति और सूक्तियों का सुन्दर समन्वय है।

इन समस्त रचनाओं के लिए प्रमुख रूप से ब्रजभाषा को अपनाया गया है। कृष्ण की जन्म-भूमि की भाषा होने के कारण भक्तकवियों द्वारा ब्रजभाषा में काव्य की रचना स्वाभाविक थी। इसके अतिरिक्त मुगल-साम्राज्य का केन्द्र आगरा ब्रजभाषा के क्षेत्र में था। अतः, मुगल-दरबार में ब्रजभाषा को आश्रय मिला, ऐसा अनुमान लगाना अप्रासंगिक न होगा। उधर अवधी राम की जन्मभूमि की भाषा थी। इसलिए राम-भक्त कवियों ने उसमें रचनाएँ कीं। दूसरे, जायसी आदि सूफी कवि मूलतः अवध के थे। उनके द्वारा अवधी को काव्य-भाषा के रूप में स्वीकार करना स्वाभाविक ही था। अभिप्राय यह कि बघेली को ब्रजभाषा, अवधी तथा खड़ी बोली के समान साहित्यिक भाषा बनने का न तो अवसर ही मिला और न सुविधाएँ ही प्राप्त हुईं। वह ब्रजभाषा से दबी रही। फलतः, बघेली साहित्यिक दृष्टि से उपेक्षित रही है। इसमें बहुत कम ग्रंथ लिखे गये हैं। महाराज विश्वनाथसिंह की रचनाओं का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उनमें केवल 'परमधर्मनिर्णय' तथा 'विश्वनाथप्रकाश' (अमृत-सागर) नामक कृतियाँ बघेली भाषा में लिखी गई हैं। इनकी भाषा के उदाहरण इस प्रकार हैं—

मांस केर यह अर्थ है की जेकर मांस हम खात हैं, ते हमारौ मांस खाई। और बर्ष वर्ष मां जे अश्वमेध करत है, सो वर्ष भर औ जो मांस नहीं खात तेका बराबर पुन्य है। —परमधर्मनिर्णय : पृष्ठ ५५, बस्ता नं० १३, स्टॉक ११६।

अथ प्रथम रोग विचार। रोग केका कही। जेमा अनेक प्रकार की पीड़ा होई तेका रोग कही। सोग रोग दुई प्रकार का है—एक तो कायक है, दूसरा मानस है। सरीर मॉं है सो कायक। तेका व्याधि कही। मन ते जो उत्पन्न होइ तेका मानसिक व्याधि कही। सो ये दोऊ रोग बात पित कफ ते उपजत है। —विश्वनाथप्रकाश (अमृतसागर), पृष्ठ १।[1]

स्वर्गीय पं० भवानीदीन शुक्ल ने वाल्मीकिरामायण की टीका बघेली में की है। यह पं० रामदास पयासी (देवराजनगर, सतना) के पास सुरक्षित है।

बघेलखण्ड के शासकों एवं निवासियों ने अपने दैनिक कार्यों में बघेली भाषा का प्रयोग किया है। शासन-कार्य में भी इसका उपयोग यथासम्भव होता रहा है। अधिकांश दान-पत्र बघेली में लिखे हुए सुरक्षित हैं।

---

१. हिन्दी-साहित्य का बृहत् इतिहास, षोडश भाग, पृ० २७४।

डॉ० केलॉग कृत 'ए ग्रामर ऑव दि हिन्दी लेंग्वेज' पुस्तक में बघेलखण्डी भाषा के व्याकरण का विवेचन किया गया है। डॉ० केरी ने बाइबिल का अनुवाद बघेली भाषा में किया था, जो सिरामपुर-मिशन के द्वारा सन् १८२१ ई० में प्रकाशित किया गया था।

लोक-साहित्य

बघेली में विविध विषयक लोक-साहित्य प्रचुर मात्रा में रचा गया है। यह दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—गद्य तथा काव्य। गद्य के अन्तर्गत लोक-कथाओं का विशिष्ट स्थान है। इनमें देवी-देवता, राजा-रानी, पशु-पक्षी, भूत-प्रेत, साधु-संत आदि का वर्णन किया गया है। इन कथाओं का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन तथा उपदेश-प्रदान करना है। कहनूत अथवा उक्खान (कहावतें) तथा मुहावरों की दृष्टि से बघेली साहित्य अत्यंत सम्पन्न है। नीचे कुछ कहावतों और मुहावरों का उल्लेख किया जा रहा है :

कहावतें

१. आंखी न कान, कजरौटा नौ नौठे—अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह।
२. आवै न जाय, दादा गुलेल लइदे—उपयोग न जानते हुए भी किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए हठ करना।
३. घर के लड़का गोही चाटैं, मामा खायँ अमावट—घरवालों का अनादर और सम्बन्धियों का सत्कार।
४ नाम लखेसुरी, मुँह कुकुरकस—नाम के अनुरूप गुण न होना।
५. तेल का चन्दन घिस मोरे नंदन—दूसरे की वस्तु का अपव्यय करना।

मुहावरें

१.	आँखी निपोरब	—	आँख दिखाना।
२.	लोसरी आब	—	बहुत लाड़-प्यार दिखाना।
३.	सडँस लगाउब	—	बराबरी करना।
४.	लुरखुरिया करब	—	चापलूसी करना।
५.	लउनी लगउब	—	प्रलोभन देकर अपने पक्ष में लाने का प्रयास करना।

बघेली लोक-काव्य विभिन्न विधाओं में लिखा गया है। इनमें पँवारों का प्रमुख स्थान है। धार्मिक संस्कार, देवी-देवता आदि विभिन्नविषय-परक गीतों का अक्षय भाण्डार बघेली भाषा की श्रीसम्पन्नता का द्योतक है। इसकी पहेलियाँ बघेली भाषा-भाषियों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशा पर पर्याप्त प्रकाश डालती हैं। यह निम्नलिखित उदाहरणों से स्पष्ट है—

१ सरकत आवै, सरकत जाय।
सांप न होय बड़ दँइदर आय॥ — रस्सी

२. एक सींग के गोली गाय।
जेतनै खवावै, ओतनै खाय॥ — चक्की।

३. एक लीन्हिन, दुई फेंकिन। — दातौन

४. उजर बिलैया, हरियर पूंछ।
तुम जाना महतारी पूत॥ — मूली

५ एक बाल घर भर बूसा। दिया (दीपक)

बघेली में बहुतेरे कवि लोक-साहित्य की सर्जना करते रहे हैं। यहाँ उनमें से कुछ का संक्षिप्त परिचय देना समीचीन प्रतीत होता है।

१. पंडित हरिदास—बघेली के लोक-कवियों में पं० हरिदास का प्रमुख स्थान है। इनका जन्म सन् १८७७-७८ ई० में गुढ़ (रीवाँ) में हुआ था। इनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। रीवाँ राज्य की ओर से इन्हें दो रुपये मासिक वृत्ति मिलती थी। रीवाँ राज्य में इनका काम था—कष्टहर महादेव के मंदिर में स्थापित वीणा-पुस्तक-धारिणी भगवती के आलय में दीप जलाना। यह अपनी कविता में अपने निवास स्थान की दैनिक घटनाओं तथा ग्राम-निवासियों के स्वभाव का चित्रण प्रमुख रूप से किया करते थे। इनकी रचना में हास्यरस का अधिक पुट रहता था।

२. नजीरुद्दीन सिद्दीकी 'उपमा'—इनका जन्म सन् १८६६ ई० में रामनगर (रीवाँ) में हुआ था। इनकी मृत्यु सन १६४२ ई० में हुई। (१) 'उपमा-भजनावली', (२) 'बहारे-कजली' तथा (३) 'बेईमान परोसी'—ये 'उपमा' जी की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। इनकी भक्ति-विषयक भावनाएँ अधिक उदार थीं। इन्होंने सरल और सुबोध भाषा का प्रयोग किया है, जिसपर उर्दू भाषा की स्पष्ट छाप परिलक्षित होती है।

३. बैजनाथप्रसाद 'बैजू'—इनका जन्म सतना (रीवाँ) में सन् १६१० ई० को हुआ। 'बैजू' की रचनाओं का संग्रह 'बैजू की सूक्तियाँ' नाम से विख्यात है। इनकी कविता में ग्रामीण जनता की भावनाओं एवं लोक-जीवन का सजीव चित्रण हुआ है। 'बैजू' की शैली प्रवाहमयी तथा भाषा शुद्ध बघेली है। इनकी 'किसानी' कविता की निम्नलिखित पंक्तियों में वर्षा के आने पर साधनहीन कृषक की उद्विग्नता द्रष्टव्य है—

> जउने दिन तें बरसा पानी, तब किसान चौंआने।
> का करी अब का करी अब, अइसन कहि बिललाने ॥
> मनई भगिगें सगले आसौं, बरदौ कम है दुइठे।
> सुना सपूनराम, कुछ करिहा, गुजर नहीं है बइठे ॥

४. पं० गुरुरामप्यारे अग्निहोत्री—इनका जन्म सन् १६१५ ई० को ग्राम 'करी' (सतना) में हुआ। इन्होंने संस्कृत, पुरातत्त्व तथा इतिहास का विशेष अध्ययन किया है। विंध्य-प्रदेश सरकार ने इनकी कई रचनाएँ पुरस्कृत की हैं। इन्होंने लगभग २१ पुस्तकों की रचना की है। इनमें से 'विंध्य-प्रदेश का इतिहास', 'सोहावल राज्य का इतिहास', 'प्रलाप' (कविता-संग्रह), 'रिमह'ई बोली' (व्याकरण) तथा 'रानी कै रिस' (खण्डकाव्य) विशेष उल्लेखनीय हैं। 'रानी कै रिस' काव्य में महारानी कुंदनकुमारी के साहस का वर्णन है।

५. सैफुद्दीन सिद्दीकी 'सैफू'—इनका जन्म रामनगर (रीवाँ) में सन् १६२३ ई० में हुआ। १. सैफूविनोद, २. श्रीकुंदनकुंवरि, ३. आदर्श त्यागी, ४. भजनावली, ५. चरणचिह्न—ये इनकी मुख्य रचनाएँ हैं। सैफू विनोद में 'आजकल के मैसेरुअन की दशा' का चित्रण किया गया है। 'कलेऊ केर अनेत' कविता में कलियुग के अन्याय और अनाचार का वर्णन किया है। इनकी रचनाओं में ग्राम्य-जीवन की यथार्थ स्थिति प्रतिबिम्बित होती है।

६. ब्रजकिशोर निगम 'आजाद'—इनका जन्म १५ जून, सन् १६२८ ई० को रीवाँ में हुआ। इन्होंने बहुत-सी कहानियाँ, प्रहसन आदि लिखे हैं। 'आजाद' की 'चुनाव-घोषणा-पत्र' तथा 'अउंठा छाप बनाम चुनाव' नामक कविताएँ अत्यन्त लोकप्रिय हैं। इन रचनाओं में नेताओं के झूठे आश्वासनों और चुनाव की घटनाओं का सजीव एवं व्यंग्यपूर्ण शैली में वर्णन है।

७. मोहनलाल श्रीवास्तव—इनका जन्म शहडोल (मध्यप्रदेश) में सन् १९२४ ई० में हुआ। इन्होंने बी० ए० तक शिक्षा पाई है। १. 'सन्तुख के महिमा', २. 'सजन आवत होइहैं', ३. 'कोइलिया बोलै', ४. 'घुमड़ आई कारी बदरिया' शीर्षक इनकी कविताएँ विशेष रूप से विख्यात हैं। आपकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन, प्रकृति-चित्रण तथा जीवन की सच्ची अनुभूतियों की सजीव झाँकी देखने को मिलती है।

८. रामबेटा पांडेय 'आदित्य'—आपका जन्म ग्राम 'किटहरा' (सतना) में सन् १९३८ ई० में हुआ। ये प्रतिभा-सम्पन्न कवि हैं। 'बुड़ऊ के बात' कविता में आधुनिक सभ्यता के प्रति इन्होंने गहरा व्यंग्य किया है। इनकी भाषा सुबोध और शैली प्रवाहपूर्ण है।

नीचे बघेलखण्ड में प्रचलित विविधविषयक कुछ लोकगीतों के उदाहरण दिये जा रहे हैं—

(अ) जन्म-गीत (सोहर)

पेट पिराय कुसमुसिया, बहुरिया बड़ी लेलहर हो
सास कइ दाबैं अँगुरिया, ननद के छिंगुरिया
सइँया के दाबैं हिंडुलिया, जगाये नहिं जागइं
बोलाये नहिं बोलइं हो।
सास त आहीं दरनहरो, ननद पिसनहरी
सइयाँ हैं घास के छोलइया, जगाये नहिं जागइं
बोलाये नहिं बोलइं हो।
होत बिहान पुहु फाटत ललना जनम मैं हइं
बाजे लागीं अनद बधैया, गावैं सखि सोहर हो
सास त उठी हइं गावत, ननद बजावत
सइयाँ उठे हैं पट खोल, त पटना लुटइं हो।

(आ) प्रेम-गीत (दादर)

कहउं होतिउं बदरिया घुमड़ि रहतेउं
पिया पिआरे के अँगना बरसि परतेउं।
जो मइ होतेउं नेब्बू नरंगी
राजा पिआरे के बगिआ लटकि रहतेउं।
जो हम होइत मलयगिरि चन्दन
राजा पिआरे के मथवा लपकि रहतेउं।
जो मैं होतिउं लइची केर बिरवा
राजा पिआरे के मुँह माँ गमकि रहतेउं।
जो मै होतिउं मोती केर बिरवा
पिआ पिआरे के छतिया लपकि रहतेउं।

(इ) जनेऊ-गीत

अमवाँ के नइयाँ लाला करहा,
अमिली के नइयाँ लाला झपरा।

दुबिया अइसे झुलना,
कमल अइसे फूला,
भमर अइसे झुंजा हो।

(ई) विवाह-गीत (भाँवर-गीत)

पहिली भमरि फिरि आयउँ हो बाबा, अबहूँ तोहारी हौं हो।
दूसरी भमरि फिरि आयउँ हो बापा, अबहुँ तोहारी हौं हो।
तिसरी भमरि फिरि आयउँ काका, अबहूँ तोहारी हौं हो।
चउथी भमरि फिरि आयउँ भइया, अबहुँ तोहारी हौं हो।
पाँचउँ भमरि फिरि आयउँ नाना, अबहूँ तोहारी हौं हो।
छठउँ भमरि फिरि आइउँ आजी, अबहूँ तोहारी हौं हो।
सातउँ भमरि फिरि आइउँ माया, अब भइउँ परायी हो।

(उ) विदा-गीत

ई सुवनन का अइसन पालेन, अइसे चना केर दार,
पै ईं सुवनन मोर कान न मानइं, उड़ि जंगल का जाइं।
ईं ललन का अइसन पालेन, कांचेन दूध पिआइ,
पै ईं ललना मोर कान न मानइं चढ़ि ससुररिया जाइं।
ईं ढेरियन का अइसन पालेन, काचेन दूध पिलाइं,
पै ईं ढेरिया मोर कानन मानइं, चलि रे बिदेसइ जाइं॥

(ऊ) होली-गीत

फागुन में ना जिअउं रसमाती
अहउ कंत घर हूँ ना आये
बालम बिदेसवा माहीं छाये
बसंत ना आवइ, कइसे पठामउं पाती
अजहूँ घर नहि आये।
सूती सेजरिया जियरा घबराने
बिरहा सतावइ अधिरात
ओ कंत घर हूं ना आये।
सबके महलिया मा धूम मची हइ
मोरे लेखे भादउं बीचि
कंत घर हूं ना आये।

उपर्युक्त विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बघेली में विविधविषयक लोक-साहित्य प्रचुर मात्रा में रचा गया है। इसके संग्रह, पर्यवेक्षण, अध्ययन और अनुशीलन की महती आवश्यकता है, जिससे इसके लोक-साहित्य का सुव्यवस्थित एवं प्रामाणिक रूप प्रकाश में आ सके। यह कार्य हो जाने पर बघेली भाषा और साहित्य के अध्ययन को अधिक विस्तृत, प्रौढ़ तथा ज्ञानवर्द्धक बनाया जा सकता है।

✱

बघेली भाषा-क्षेत्र

बघेली भाषा - क्षेत्र